पालि-प्राकृत परियोजना

अनुक्रम

पालि–प्राकृत परियोजना	2
पालि–प्राकृत परियोजना में कार्यरत अध्येता	5
पालि–प्राकृत परियोजना में आयोजित राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठियों का विवरण	6
शिक्षण/प्रशिक्षण एवं कार्यशाला	16
पालि–प्राकृत परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित ग्रन्थ	19

पालि-प्राकृत परियोजना

भारतीय आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत पालि-प्राकृत भाषा प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध और बहुआयामी रहा है। प्राकृत भाषा और उसका साहित्य जनसामान्य की संस्कृति से समृद्ध है। स्वाभाविक रूप से प्राकृत भाषा जनता से सम्पर्क रखने का एक आदर्श साधन बन जाती है इसीलिए प्राकृत भाषा को समुचित आदर प्रदान करते हुए तीर्थंकर महावीर, सम्राट अशोक एवं खारवेल जैसे महापुरुषों ने अपने-अपने संदेशों के प्रचार-प्रसार के लिए प्राकृत का उपयोग किया है। जैन आगमों में प्राकृत का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है, किन्तु वेदों की भाषा में भी प्राकृत भाषा के तत्त्वों का समावेश है। भारत के अधिकांश प्राचीन शिलालेख प्राकृत में हैं। प्रारम्भ से ही इस देश के नाटकों में प्राकृत का प्रयोग होता रहा है।

जन सामान्य की स्वाभाविक भाषा, मूलभाषा प्राकृत रही है। समय-समय पर सामान्य जन की विभिन्न बोलियाँ साहित्यिक प्राकृत का रूप भी ग्रहण करती रही हैं। इसी विशेषता के कारण प्राकृत भाषा ने भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विश्व की विभिन्न भाषाओं की शब्द-सम्पदा की समृद्धि में भी प्राकृतभाषा का योगदान रहा है।

श्रमण परम्परा के अनुयायी प्राकृत की विभिन्न बोलियों का अच्छा ज्ञान रखते थे इसलिए श्रमण परम्परा का विशाल वाङ्मय आज उपलब्ध है। तीर्थंकर द्वारा उपदेशित और उनके अनुयायियों द्वारा सम्पोषित अनेक प्रकार का साहित्य सृजन किया गया है। महत्त्वपूर्ण दार्शनिक एवं कथात्मक साहित्य, काव्य, नाटक, स्तोत्र, उपन्यास आदि ग्रन्थ सरल एवं सुबोध प्राकृत में हैं। इसके अतिरिक्त कथा, दृष्टान्त-कथा, प्रतीक कथा, लोक कथा आदि विषयक ग्रन्थ भी प्राकृत में लिखे गये हैं। जो मानव मूल्यों और नैतिक आदर्शों की सही शिक्षा देकर व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाते हैं। प्राकृत में लिखे गये सबसे प्राचीन ग्रन्थ आगम कहे जाते हैं। इनमें जैनधर्म एवं दर्शन के आचार-विचार का प्रणयन किया गया है। भारतीय कथा-साहित्य का अनुपम उदाहरण गुणाढ्य कृत वृहत्कथा है जो कि सभी प्रकार की कथाओं का उपजीव्य भी कहा जा सकता है। जैनागमों और उसके व्याख्या साहित्य, चूर्णियों एवं निर्युक्तियों में प्राकृत-कथा का अमूल्य खजाना है। प्राकृत में अनेक काव्य, चरित ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध हैं। संस्कृत के अनेक कवियों एवं अलंकार-शास्त्रियों ने अपने लाक्षणिक ग्रन्थों में प्राकृत की सैकड़ों गाथाओं को उद्धृत कर उनकी सुरक्षा की है।

इसी प्रकार से पालि भाषा और साहित्य भी धर्म, दर्शन, साहित्य और लौकिक परंपराओं को सुदृढ़ ढंग से समझने में उपयोगी होगा। पालि भाषा और साहित्य ने विश्व संस्कृति को सुदृढ़ किया है। पालि साहित्य के गहन

अध्ययन के माध्यम से हम प्रारंभिक बौद्ध धर्म के अद्वितीय पहलुओं को अन्वेषित कर आधुनिक संदर्भ में लोकोपयोगी बना सकते हैं। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रचलित विभिन्न सम्प्रदायों ने बौद्ध संस्कृति को अपनाकर आधुनिक विश्व को प्रशस्त मार्ग की ओर उन्मुख किया है। पालि त्रिपिटक में धर्म-दर्शन, शिक्षा, कला, समाज, प्रशासन आदि नाना विषयों का समावेश है। अतः स्वाभाविक रूप से इन सभी स्रोतों के मूल्यों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष और विस्तृत अथवा सूक्ष्म व्याख्यान किया गया है।

पालि नाम वस्तुतः बुद्ध वचनों की रक्षा करने के कारण पड़ा। इसकी व्युत्पत्ति-पंक्ति, पाठ, पालयति, आदि से की जाती है। थेरवाद एवं पालि दोनों ने एक-दूसरे को अभी तक नहीं छोड़ा है। आज बौद्धों का विशाल साहित्य उपलब्ध है लेकिन प्रामाणिक बुद्धवचनों को जानने के लिये त्रिपिटक ही सर्वाधिक मान्य है। भगवान बुद्ध का जीवन कतिपय तपः-पूत मूल्यों का अनुसन्धान अभ्यास और उनके समर्पण का उदात्त उदाहरण है। बौद्ध विचारधारा ने विश्वस्तर पर यह मान्यता और प्रतिष्ठा प्राप्त की है तथा सुदीर्घकाल तक स्वयं को प्रासंगिक बनाये रखने की जो शक्ति अर्जित की है। इन सब का श्रेय यदि किसी एक विशेषता को दिया जा सकता है तो वह है जीवन-मूल्य। ये जीवन-मूल्य तथागत बुद्ध और उनकी देशना का सार है और इसका सर्वाधिक प्राचीन, गम्भीर और यथासम्भव प्रामाणिक-दिग्दर्शन पालि साहित्य में प्राप्त होता है। पालि त्रिपिटक साहित्य सुत्तों का संग्रह है। सुत्तों का प्रारम्भ **''एवं मेव सुतं, एकं समयं भगवा सावित्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे''** इस तरह के वाक्यों से होता है जो कि आधुनिक पत्रकारिता से साम्य रखते है।

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त जो साहित्य हमें दोनों भाषाओं का प्राप्त होता है उससे स्पष्ट होता है कि पालि-प्राकृत जनसामान्य की भाषा थी और ही ईसा पूर्व से ही इनके साहित्य का सृजन हुआ किन्तु पठन-पाठन की परम्परा के अभाव के कारण इसका ज्ञान विलुप्त प्रायः हो गया, जिसका उत्थान पुनः अनेक सामाजिक संस्थाओं और विद्वानों ने प्रारम्भ किया है। प्राचीन भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संर्वधन हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में कार्य प्रारम्भ किया गया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के माध्यम से लखनऊ, दिल्ली और जयपुर परिसर में पालि-प्राकृत अध्ययन केन्द्र की स्थापना कर मूल पालि त्रिपिटक एवं प्राकृत वाङ्मय के विकास हेतु कार्य किया जा रहा है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने ग्यारहवें पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पालि-प्राकृत भाषा के उन्नयन के लिए राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय को दायित्व स्वरूप दिया है, जिसके अन्तर्गत अधोलिखित कार्य सम्पन्न हो चुके हैं:-

1. पालि एवं प्राकृत में योजना में दस कनिष्ठ शोध अध्येता एवं दस वरिष्ठ शोध अध्येता नियुक्त हैं।
2. दोनों भाषाओं में एक-एक विकास अधिकारी भी नियुक्त हैं।

3. भारत या बाह्य देशों में यत्र-तत्र बिखरे साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्राप्त स्रोतों का संकलन कर उनका सम्पादन, संस्कृत छाया के साथ अनुवाद कर प्रकाशन किया जा रहा है।

- **पालि-प्राकृत परियोजना में प्रस्तावित अधोलिखित कार्य चरणवद्ध ढंग से संपन्न किये जा रहे हैं :-**

1. पालि-प्राकृत साहित्य का संस्कृतच्छाया के साथ प्रकाशन।
2. पालि-प्राकृत के व्याकरण का प्रकाशन।
3. भारत में पालि एवं प्राकृत के स्तरीय प्रकाशन।
4. अन्तर्राष्ट्रिय एवं राष्ट्रिय स्तर पर पालि-प्राकृत की संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं विस्तार व्याख्यानों का आयोजन करना।
5. पालि एवं प्राकृत के मूल ग्रथों का सम्पादन कर प्रकाशित करना।

पालि अध्ययन केन्द्र (लखनऊ परिसर) का उद्घाटन 22 जनवरी 2010

बाएँ से दाएँ - प्रो. विजय कुमार जैन (केन्द्र संयोजक), प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी (कुलपति), महामहिम श्री बी.एल. जोशी (राज्यपाल), डॉ. अनिता भटनागर जैन (संयुक्त सचिव भाषा, एम.एच.आर.डी), प्रो. सर्वनारायण झा (प्राचार्य लखनऊ परिसर)।

पालि-प्राकृत परियोजना में कार्यरत अध्येता

1. पालि-प्राकृत अध्ययन एवं शोध-केन्द्र, दिल्ली

प्राकृत : 1. डॉ. रजनीश शुक्ल (विकास अधिकारी, पालि-प्राकृत)

2. श्री सतेन्द्र कुमार जैन (वरिष्ठ शोध अध्येता)

3. श्री देवमणि पाण्डेय (कनिष्ठ शोध अध्येता)

4. डॉ. प्रभात कुमार दास (कनिष्ठ शोध अध्येता)

5. श्री दिनेश (कनिष्ठ शोध अध्येता)

पालि : 1. श्री अजय कुमार सिंह (कनिष्ठ शोध अध्येता)

डाटा एंट्री ऑपरेटर : श्री हरि थापा

2. प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्र राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर

1. डॉ. धर्मेन्द्र जैन (विकास अधिकारी प्राकृत)
2. डॉ. सुदर्शन मिश्र (वरिष्ठ शोध अध्येता)
3. डॉ. तारा डागा (वरिष्ठ शोध अध्येता)
4. डॉ. सुमत कुमार जैन (वरिष्ठ शोध अध्येता)
5. डॉ. पुलक गोयल (वरिष्ठ शोध अध्येता)
6. श्री रामनरेश जैन

डाटा एंट्री ऑपरेटर : श्री रामप्रसाद जाजोरिया

3. पालि अध्ययन केन्द्र राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ

पालि : 1. डॉ. मोहन मिश्र (वरिष्ठ शोध अध्येता)

2. श्री जयवन्त खण्डारे (वरिष्ठ शोध अध्येता)

3. डॉ. राहुल अमृतराज (वरिष्ठ शोध अध्येता)

4. डॉ. वेदव्यास पाण्डेय (वरिष्ठ शोध अध्येता)

5. डॉ. सन्तोष प्रियदर्शी (वरिष्ठ शोध अध्येता)

6. श्री प्रदीप कुमार द्विवेदी (कनिष्ठ शोध अध्येता)

7. श्री प्रिंस कुमार जैन (कनिष्ठ शोध अध्येता)

8. कुमारी प्रियंका (कनिष्ठ शोध अध्येता)

9. श्री प्रदीप ल्यूटेल (कनिष्ठ शोध अध्येता)

प्राकृत : 1. डॉ. पत्रिका जैन (वरिष्ठ शोध अध्येता)

डाटा एंट्री ऑपरेटर : श्री विकास जैन

परियोजना से कार्यमुक्त अध्येता

1. डॉ. प्रियसेन सिंह (विकास अधिकारी)
2. डॉ. अलका बरुआ (वरिष्ठ शोध अध्येता)
3. श्री राजीव रंजन (वरिष्ठ शोध अध्येता)
4. श्रीमती श्वेता वार्ष्णेय(कनिष्ठ शोध अध्येता)

5. श्री अमित कुमार (कनिष्ठ शोध अध्येता)

6. डॉ. आनन्द कुमार जैन (कनिष्ठ शोध अध्येता)

7. डॉ. जीवक प्रसाद (वरिष्ठ शोध अध्येता)

8. डॉ. नीलिमा चौहान (वरिष्ठ शोध अध्येता)

पालि-प्राकृत परियोजना में आयोजित राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठियाँ

1. राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी

विषय : **प्राकृतसाहित्यसन्दर्भे भारतीय-परम्परायाः बहुलता विविधता च**

दिनांक : 25-27 जुलाई, 2009 स्थान : अणुव्रत भवन, जयपुर

बाएँ से दाएँ - श्री चन्दन सिंह कन्याल, श्रीमती रीता चटर्जी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. अंशुमान सिंह (पूर्व राज्यपाल, राजस्थान), मुनि विनय सागर, प्रो. के. डी. त्रिपाठी, प्रो. एस.पी. शर्मा, प्रो. अर्कनाथ चौधरी।

संगोष्ठी का सार :-

संस्थान द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी का आयोजन जयपुर स्थित अणुव्रत भवन में किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री अंशुमान सिंह ने किया। संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, प्रो. एस. पी. शर्मा, प्रो. नावमर सिंह, प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रो. भागचन्द भास्कर, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. श्रेयांश सिंघई आदि विद्वानों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को गरिमामय स्वरूप प्रदान किया। इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अन्तर्गत भारत के सुदूर क्षेत्रों से पधारे हुए 60 विद्वानों

ने शोध पत्रों का वाचन किया। इन शोध पत्रों को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने प्राकृत अध्ययन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत **''प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ''** नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है।

2. अन्तर्राष्ट्रिय पालि संगोष्ठी

विषय : **बौद्धपरम्परायाः वैश्विकसंदेशः (पालि-साहित्यस्य विशेषसंदर्भे)**

दिनांक : 22-24 सितम्बर 2009 स्थान : विज्ञान भवन, नई दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रिय पालि संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

बाएँ से दाएँ- बोलते हुए डॉ. अनिता भटनागर जैन, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, श्री आर.पी. अग्रवाल (सचिव, उच्च शिक्षा, भारत सरकार) प्रो. चिरापट प्रपन्नविद्या।

संगोष्ठी का सारः-

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी का उद्घाटन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षा सचिव ने किया। इसमें प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. चिरापट प्रपन्नविद्या (थाइलैण्ड), डॉ. सिसावेयु सोवन्नी, भिक्षु कांग सुथिया चत्तमाचेरो, प्रो. भिक्षु सत्यपाल, प्रो.के.टी.एस. सराव, प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा, प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. विजय कुमार जैन, प्रो. वैद्यनाथ लाभ आदि विद्वानों ने इसमें

सहभागिता ग्रहण की। कुल 60 शोध पत्रों का वाचन किया गया। संस्थान से पालि अध्ययन ग्रंथमाला के अन्तर्गत ‘‘ बौद्धपरम्पराया: वैश्विकसन्देश:’’ पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

3. राष्ट्रिय पालि-प्राकृत संगोष्ठी

विषय : **पालिप्राकृतसंस्कृत अन्त:संबंध:**

दिनांक : 27–28 मार्च 2010 स्थान : लखनऊ

प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ पुस्तक लोकार्पण समारोह

संगोष्ठी का सार :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के लखनऊ परिसर में आयोजित पालि-प्राकृत-संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन कर तीनों ही विधाओं के भारतवर्षीय विद्वानों को इस विधा के विकास के निमित्त अपने योगदान हेतु आह्वान किया जिसमें सम्पूर्ण देश से लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया तथा जयपुर, दिल्ली एवं लखनऊ परिसर के अध्येता भी सम्मिलित हुए, जिसमें प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. संघसेन सिंह,

प्रो. रामानुज देवनाथन आदि विद्वानों ने गरिमामय उपस्थिति रही। पालि भाषा में प्रथम बार धनिय-सुत्त नाटक का मञ्चन परिसर के छात्रों द्वारा किया गया।

4. अन्तर्राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी

विषय : **प्राकृत साहित्य में वैश्विक मूल्य**

दिनांक : 12-14 अक्टूबर, 2010 स्थान : श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)

अन्तर्राष्ट्रिय प्राकृत सम्मेलन श्रवणबेलगोला में पुस्तक विमोचन का दृश्य

बाएँ से दाएँ- प्रो. हम्पा नागराजैया, प्रो. मंगल प्रज्ञा, भट्टारक चारूकीर्ति, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. राबर्ट जेडिनबोस (जर्मनी), श्री एम. जे इन्द्रकुमार एवं प्रो. प्रेमसुमन जैन।

संगोष्ठी का सार :-

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान एवं प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन श्रवणबेलगोला में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन परमपूज्य भट्टारक स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी, जैन विश्व भारती लाडनूँ की माननीया कुलपति प्रो. समणी मंगल प्रज्ञा जी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के सान्निध्य में हुआ। इसमें प्रो. नलिनी बलबीर, पैरिस विश्वविद्यालय, जर्मनी से पधारे प्रो. जयेन्द्र सोनी एवं प्रो. ल्यूटगार्ड सोनी, प्रो. हम्पा नागराजैया, प्रो. राजाराम

जैन, प्रो. एडलेट मेट्टे आदि विद्वानों ने भाग लिया। संगोष्ठी में आमन्त्रित एवं पठित लेखों का संपादन प्रो. प्रेम सुमन जैन ने किया है जिसका प्रकाशन प्राकृत अध्ययन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत किया गया है।

5. पूर्वोत्तर भारतीय बौद्ध अध्ययन सभा 11वाँ वार्षिक सम्मेलन (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

दिनांक : 16–18 सितम्बर, 2011 स्थान : गंगटोक (सिक्किम)

गंगटोक मे आयोजित राष्ट्रिय बौद्ध सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का दृश्य

बाएँ से दाएँ – प्रो. बी.एन. लाभ (सचिव, आई.एस.बी.एस.), प्रो. धर्म चन्द जैन (अध्यक्ष, आई.एस.बी.एस), श्री सी. एस. राव (सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सिक्किम), प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी (कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली), आचार्य महेन्द्र लामा (कुलपति, केन्द्रिय, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक), प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर एवं प्रो. सूर्यप्रकाश व्यास ।

गंगटोक में आयोजित राष्ट्रिय बौद्ध सम्मेलन के समापन सत्र का दृश्य

बाएँ से दाएँ – प्रो. बी.एन. लाभ (सचिव, आई.एस.बी.एस.), प्रो. के. बी. सुब्बरायडू (कुल सचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली), श्री नरेन्द्र कुमार प्रधान (मानव संसाधन मन्त्री, सिक्किम), प्रो. अविनाश श्रीवास्तव (उपाध्यक्ष, आई.एस.बी.एस.), डॉ. शुक्ला मुखर्जी (संगोष्ठी निदेशक एवं परियोजना अधिकारी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली)।

संगोष्ठी का सार :

अखिल भारतीय बौद्ध अध्ययन सभा एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में उत्तरपूर्वी राज्य सिक्किम में पालि एवं बौद्ध वाङ्मय के विविध विधाओं पर केन्द्रित शताधिक शोधपत्रों का वाचन हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन 16 सितम्बर, 2011 एवं समापन 18 सितम्बर, 2011 को सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न हिस्सों से सैकड़ो विद्वानों एवं शोधार्थियों ने इसमें भाग लिया।

6. राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी

विषय : **भारतीयपरम्परायां प्राकृतभाषायाः साहित्यस्य च अवदानम्**

दिनांक : 10-12 मई, 2012 स्थान : श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली

राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

बाएँ से दाएँ - श्री प्रदीप जैन, केन्द्रीय मंत्री, ग्रामीण विकास मंत्रालय, प्रो. सुदीप जैन, प्रो. के.डी. त्रिपाठी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी एंव न्यायमूर्ति डॉ. मुकून्दकाम शर्मा।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान और श्री लाल बहादुर राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वाधान में दिनाङ्क 10 से 12 मई, 2012 को भारतीयपरम्परा में प्राकृत भाषा और साहित्य का अवदान विषय पर राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में 25 शैक्षणिक सत्र संपन्न हुए जिसमें 120 विद्वानों ने शोधालेख प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी के अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रिय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने प्राकृत भाषा को लोकतन्त्रीय भाषा बताई साथ ही साथ भगवान महावीर और बुद्ध के उपदेशों को भारतीय संस्कृति का प्राण बताया। विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति डॉ. मुकुन्दकम शर्मा ने कहा कि भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्राकृत और पालि का अध्ययन आज के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक है। इस समारोह में सारस्वत अतिथि डॉ. समणी चारित्रप्रज्ञा (कुलपति जैन विश्वविद्यालय) एवं प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी, डॉ. वी.के. महापात्र, कुलसचिव, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ थें। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने किया। सभी विद्वानों ने भी संस्कृत भाषा के साथ- साथ पालि

और प्राकृत भाषा और साहित्य के अध्ययन को आवश्यक बताया तथा कहा कि यदि हमें वास्तविक रूप से भारतीय संस्कृति को समझना है तो इनको समझना आवश्यक है।

राष्ट्रिय प्राकृत सम्मेलन दिल्ली में पुस्तक विमोचन का दृश्य

बाएँ से दाएँ – प्रो. वी.के जैन, डॉ. रजनीश शुक्ल, प्रो. के.डी त्रिपाठी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. मुकून्दकाम शर्मा, डॉ. शुक्ला मुखर्जी, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. समणी चारित्रप्रज्ञा।

समापन-सत्र का दृश्य

मुख्य अतिथि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, सारस्वत अतिथि प्रो. रामजी सिंह एवं प्रो. के.बी. सुब्बारायुडु, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान और डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, निदेशक मुक्तस्वाध्यायपीठ।

7. राष्ट्रीय पालि-प्राकृत संगोष्ठी, लखनऊ परिसर

विषय : **पालि-प्राकृत साहित्य में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान**

दिनांक : 20-22 मार्च, 2013 स्थान : राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर

उद्घाटन सत्र

बाएँ से - प्रो. वी.के जैन, प्रो. एन.एच. साम्तानी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. एस. रिम्पोछे एवं डॉ. सुरेन्द्र झा।

संगोष्ठी सार

20-22 मार्च 2013, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान लखनऊ परिसर में 'पालि-प्राकृत साहित्य में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान' विषय पर आयोजित हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन कुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, ने किया। संगोष्ठी के उद्घाटन के सत्र में पालि एवं प्राकृत के प्रमाण पत्रीय पाठ्यक्रम परीक्षा 2012 में उत्तीर्ण क्रमशः 7 एवं 12 छात्रों को प्रमाणपत्र वितरण किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद पालि एवं प्राकृत विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रो. सांम्दाग रिनपोछे ने की, विशिष्ट वक्ता प्रो. रामशंकर

त्रिपाठी वाराणसी ने बौद्ध मनोविज्ञान में आगत चित्तवृत्ति विषय पर एवं प्रो. दयानन्द भार्गव ने प्राकृत विज्ञान पर विशिष्ट व्याख्यान प्रदान किया। सायं 7 से 8 बजे प्राकृत रूपक (प्रहसन) 'चउरो जामाऊणो' तथा पालि नाटक 'अहिंसक अंगुलिमाल' का मंचन बौद्ध दर्शन एवं पालि अध्ययन केन्द्र के छात्रों के द्वारा किया गया। संगोष्ठी के आठ सत्रों में लगभग 80 विद्वानों ने पालि एवं प्राकृत साहित्य में निहित ज्ञान, विज्ञान एवं संस्कृति आदि विषयों पर शोधपत्र वाचन के साथ परिचर्चा की।

इस संगोष्ठी में पालि एवं प्राकृत के सम्पूर्ण भारत के वरिष्ठ चिन्तकों यथा – प्रो. भागचंद जैन नागपुर, पो. पद्युम्न दुबे, प्रो. हरिशंकर शुक्ल, प्रो. हरप्रसाद दीक्षित, प्रो. रमेश द्विवेदी वाराणसी, प्रो. धर्मचंद जैन कुरुक्षेत्र, प्रो. करुणेश शुक्ल गोरखपुर, प्रो. बेला भट्टाचार्य कोलकाता, प्रो. अंगराज चौधरी इगतपुरी, प्रो. वैद्यनाथ लाभ, जम्मु, प्रो. शुभचंद, प्रो. सुदीप जैन, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. फूलचंद जैन प्रेमी, प्रो. ऋषभचंद जैन, प्रो. श्रीयांसकुमार सिंघई आदि के साथ युवा अनुसंधाताओं ने अमूल्य विचारों को व्यक्त कर पालि–प्राकृत साहित्य में निहित ज्ञान–विज्ञान के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र

बाएँ से – डॉ. एल.एन. पाण्डेय, प्रो. वी.के जैन, प्रो. करुणेश शुक्ल, श्री नारायणदत्त तिवारी (पूर्व महामहिम एवं मुख्यमंत्री), प्रो. एन.एच. साम्तानी एवं डॉ. सुरेन्द्र झा।

शिक्षण/प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

➢ शिक्षण

वर्ष 2010 से नियमित रूप से पालि एवं प्राकृत के त्रैमासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम लखनऊ में संचालित है।

उत्तीर्ण छात्रों की संख्या

सत्र	पालि	प्राकृत
2010	48	27
2012	14	14
2013	22	11

➢ प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

पालि-प्राकृत-संस्कृत छाया कार्यशाला राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, जयपुर एवं लखनऊ

विकास अधिकारी एवं शोध अध्येताओं द्वारा कृत संस्कृतच्छाया का संशोधन एवं मार्गदर्शन हेतु मुख्यालय एवं जयपुर परिसर में आयोजित कार्यशाला में पालि एवं संस्कृत के विशेषज्ञ विद्वान प्रो. संघसेन सिंह एवं प्राकृत संस्कृत के विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, डॉ. जयकुमार जैन, प्रो. सत्यप्रकाश शर्मा आदि ने भाग लिया।

पालि-प्राकृत कार्यशाला, लखनऊ :

(1) नवम्बर 2010 (2) मार्च 2011 (3) 08-29 मई, 2011

(4) मार्च 2012 (14 दिवसीय) (5) 30 अक्टूबर से 11 नवम्बर 2012 तक 13 दिवसीय

(6) मार्च 6, 2013 से मार्च 19, 2013 तक 14 दिवसीय

लखनऊ परिसर में आयोजित पालि प्राकृत कार्यशाला का दृश्य

पाण्डुलिपि संरक्षण कार्यशाला (जयपुर)

दिनांक 19 से 25 जुलाई 2010 को आयोजित प्राकृत पाण्डुलिपि प्रशिक्षण कार्यशाला में दिल्ली, लखनऊ एवं जयपुर परिसर के अतिरिक्त देश के अन्य भागों से आये हुए 40 अध्येताओं ने प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में लिखित पाण्डुलिपियों का लिप्यन्तरण, सम्पादन, पाठ भेद आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पालि-प्राकृत परियोजना के अर्न्तगत आयोजित सप्त दिवसीय राष्ट्रिय प्राकृत पाण्डुलिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन माननीय प्रो. कमल चन्द सोगाणी (जयपुर) ने किया। कार्यशाला में जयपुर, दिल्ली एवं लखनऊ परिसर के शोध अध्यताओं के अतिरिक्त भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतो से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें डॉ. महावीर प्रसाद, प्रो. श्रेयांस सिंघई, डॉ. शकुन्तला जैन, डॉ. दीनानाथ शर्मा, डॉ. कमलेश जैन, ब्र. राकेश जी आदि विद्वानों ने अध्यापन कार्य किया। कार्यक्रम का समापन जयपुर परिसर में हुआ जिसमें डॉ. सुषमा सिंघवी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

प्राकृत-संस्कृतच्छाया-संशोधन/सम्पादन कार्यशाला, दिल्ली

प्राकृत-संस्कृतच्छाया-संशोधन/सम्पादन कार्यशला दिनाङ्क 14-21 मई, 2012 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने किया इस आठ दिवसीय प्राकृत संस्कृतच्छाया सम्पादन कार्यशाला जिन प्रमुख विद्वानो ने भाग लिया वह निम्नलिखित है-

आचार्य जानकी प्रसाद द्विवेदी (वाराणसी), आचार्य दामोदर शास्त्री (लाडनूं), डा. जयकुमार जैन (मुजफ्फर नगर), आचार्य हरिशङ्कर पाण्डेय (वाराणसी), आचार्य कमलेश कुमार जैन (वाराणसी), आचार्य दीनानाथ शर्मा (अहमदाबाद), आचार्य जगतराम भट्टचार्य (लाडनूं), आचार्य वृषभ प्रसाद जैन (लखनऊ) और आचार्य संघसेन सिंह (दिल्ली)। इस कार्यशाला में परियोजना के अधीन कार्यरत अध्येताओं क्षरा किये गये कार्यो का सभी विद्वानों ने सम्पादन एवं मार्गदर्शन प्रदान किया उसके साथ-साथ विविध नये शास्त्रों के संस्कृत छायानुवाद के कार्य हेतु सुझाव दिया।

कार्यशाला का समापन दिनांङ्क 21 मई, 2012 को डा. गोपीरमण मिश्र, उपनिदेशक प्रशासन की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी रहे।

उद्घाटन सत्र

पालि-प्राकृत परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित ग्रन्थ (नई दिल्ली)

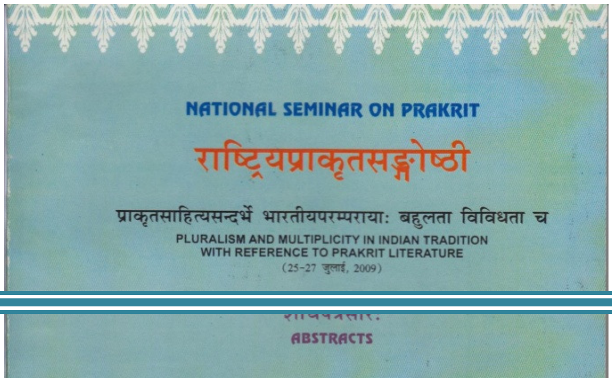

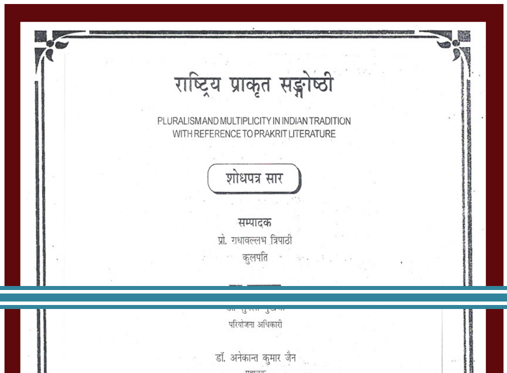

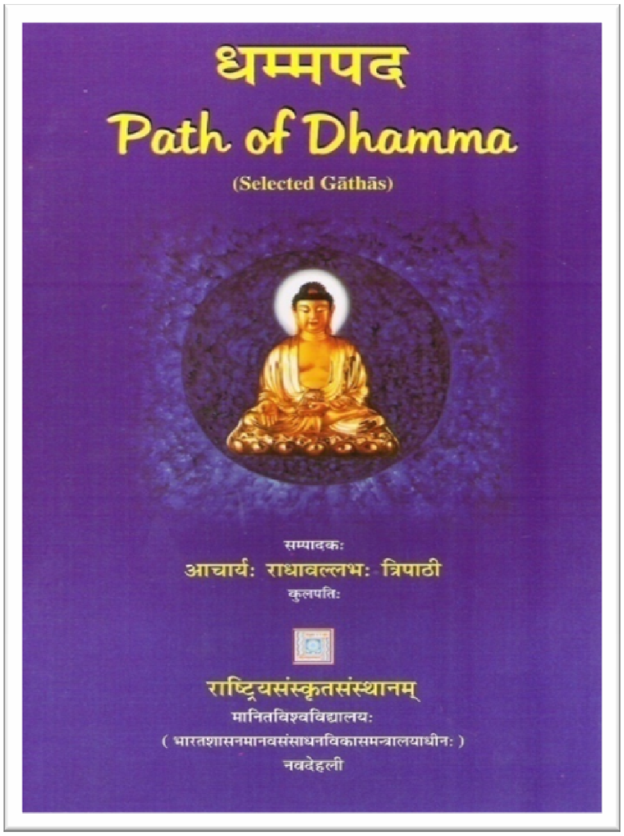

प्रकाशकः
कुलसचिवः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनकपुरी, नवदेहली-110058
website : www.sanskrit.nic.in

सहसम्पादकाः
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. सोमेशकुमारमिश्रः
डॉ. अवधेशकुमारचौबे
श्रीप्रफुल्लगडपालः
डॉ. अलका बरुआ

कार्यकारी सदस्य
श्री परमानन्दवत्सः

© राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

संस्करणम् : 2010
ISBN : 978-81-86111-25-3
मूल्य : रु. 50/-

मुद्रकः
डीं.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहरनगरम्, दिल्ली-110007

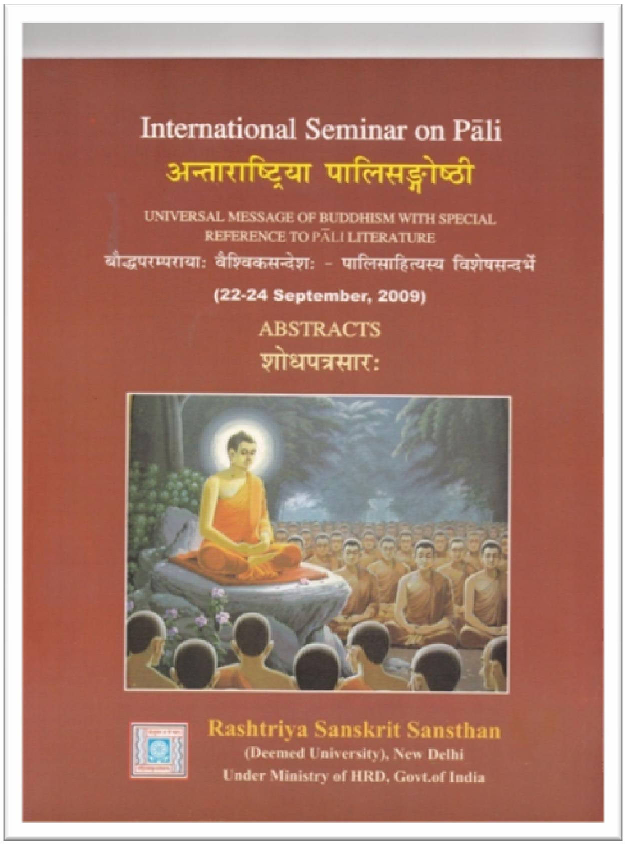

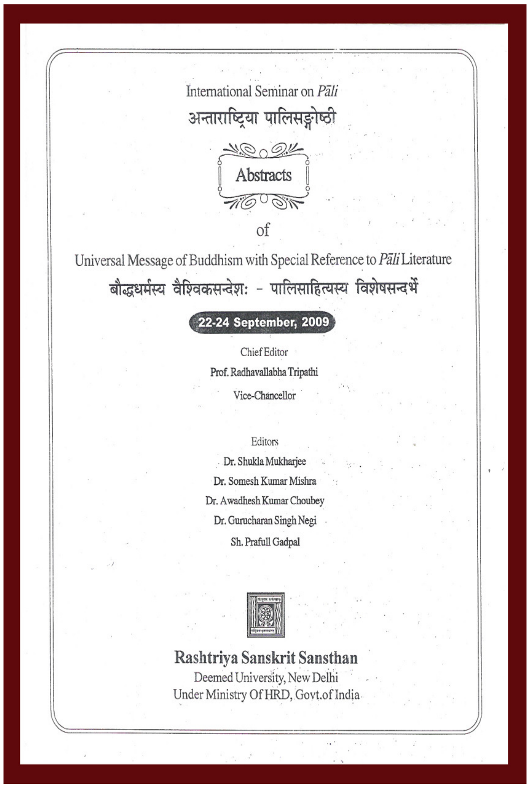

International Seminar on *Pāli*
अन्ताराष्ट्रिया पालिसङ्गोष्ठी
Abstracts
of
Universal Message of Buddhism with Special Reference to *Pāli* Literature
बौद्धधर्मस्य वैश्विकसन्देशः - पालिसाहित्यस्य विशेषसन्दर्भे
22-24 September, 2009

Chief Editor
Prof. Radhavallabha Tripathi
Vice-Chancellor

Editors
Dr. Shukla Mukharjee
Dr. Somesh Kumar Mishra
Dr. Awadhesh Kumar Choubey
Dr. Gurucharan Singh Negi
Sh. Prafull Gadpal

Rashtriya Sanskrit Sansthan
Deemed University, New Delhi
Under Ministry Of HRD, Govt.of India

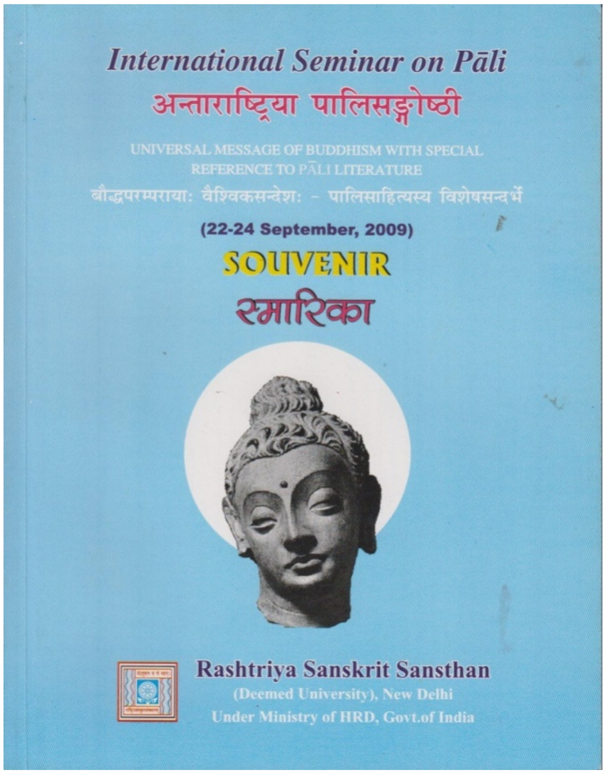

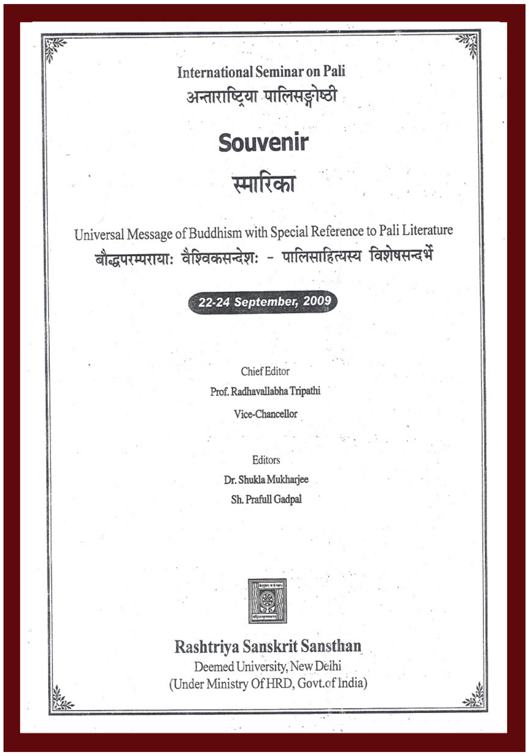

International Seminar on Pali
अन्ताराष्ट्रिया पालिसङ्गोष्ठी
Souvenir
स्मारिका
Universal Message of Buddhism with Special Reference to Pali Literature
बौद्धपरम्परायाः वैश्विकसन्देशः - पालिसाहित्यस्य विशेषसन्दर्भे
22-24 September, 2009

Chief Editor
Prof. Radhavallabha Tripathi
Vice-Chancellor

Editors
Dr. Shukla Mukharjee
Sh. Prafull Gadpal

Rashtriya Sanskrit Sansthan
Deemed University, New Delhi
(Under Ministry Of HRD, Govt.of India)

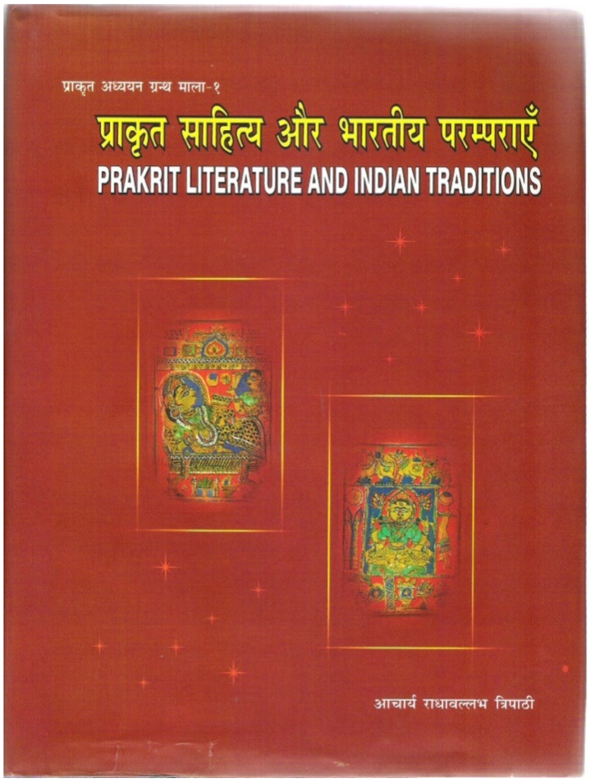

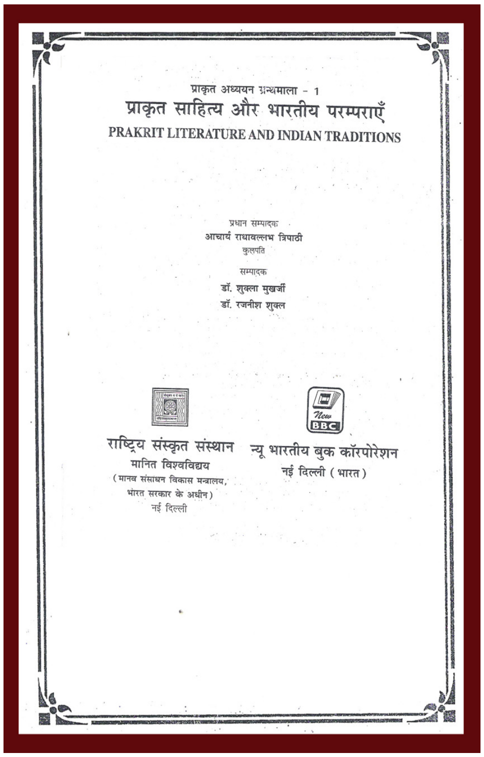
प्राकृत अध्ययन ग्रन्थमाला - 1

प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ

PRAKRIT LITERATURE AND INDIAN TRADITIONS

प्रधान सम्पादक
आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति

सम्पादक
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. रजनीश शुक्ल

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यय
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
नई दिल्ली

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन
नई दिल्ली (भारत)

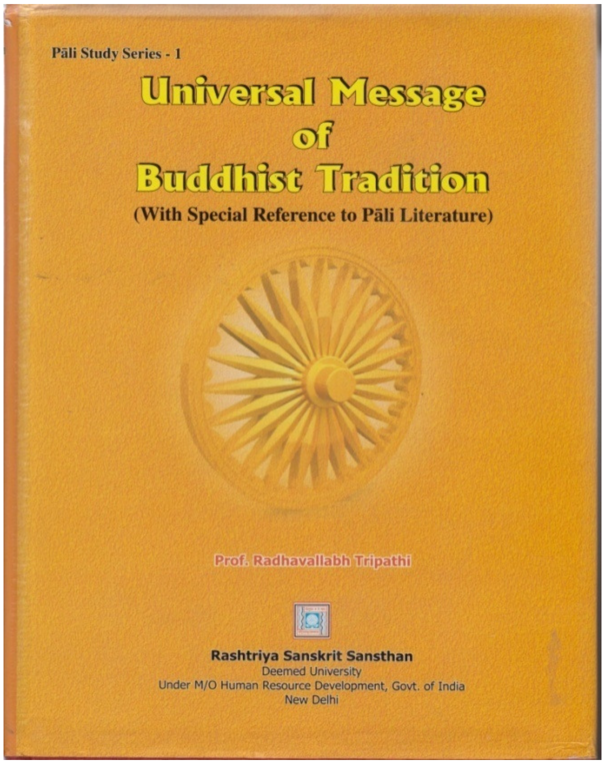

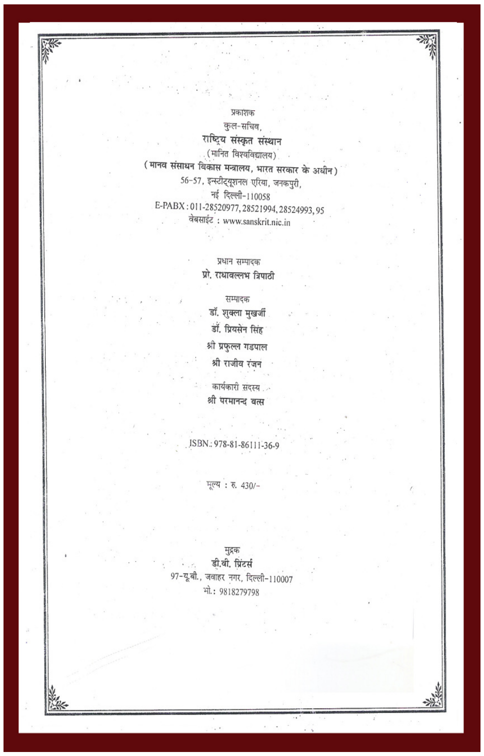
प्रकाशक
कुल-सचिव,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
E-PABX : 011-28520977, 28521994, 28524993, 95
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

प्रधान सम्पादक
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

सम्पादक
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. प्रियसेन सिंह
श्री प्रफुल्ल गडपाल
श्री राजीव रंजन

कार्यकारी सदस्य
श्री परमानन्द वत्स

ISBN.: 978-81-86111-36-9

मूल्य : रु. 430/-

मुद्रक
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007
मो.: 9818279798

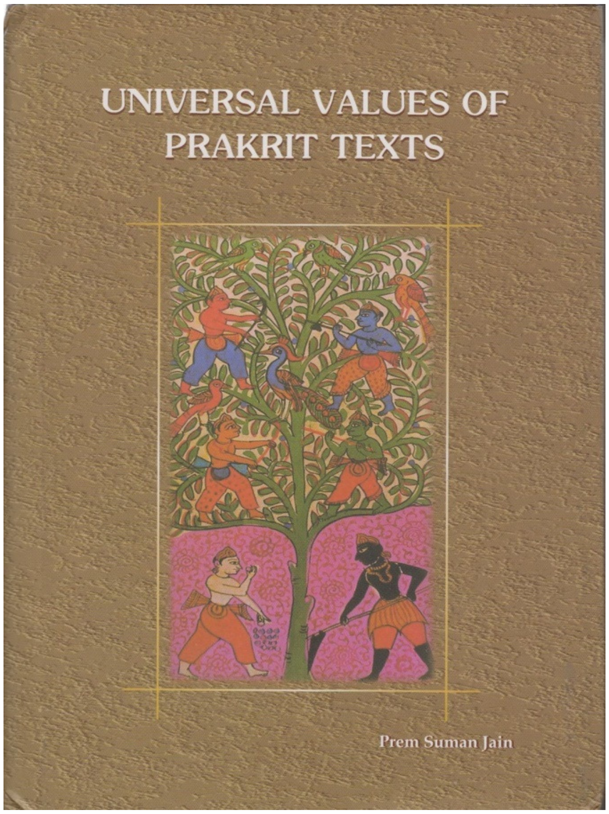

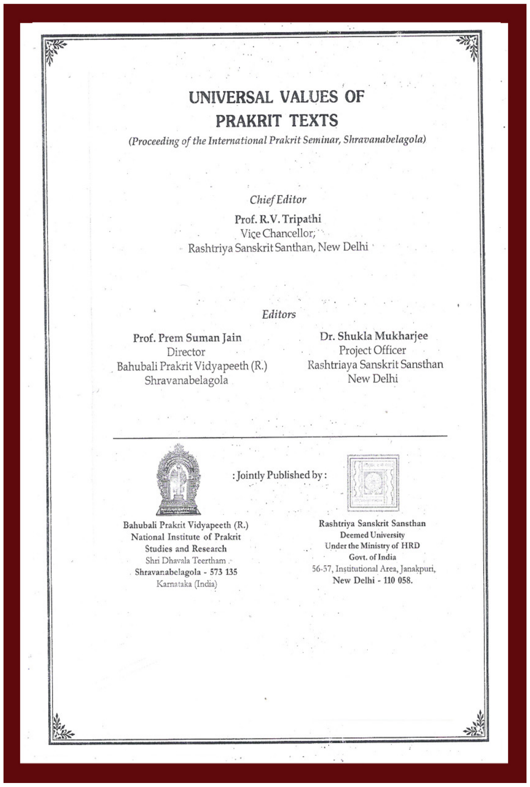
UNIVERSAL VALUES OF
PRAKRIT TEXTS
(Proceeding of the International Prakrit Seminar, Shravanabelagola)

Chief Editor
Prof. R.V. Tripathi
Viçe Chancellor,
Rashtriya Sanskrit Santhan, New Delhi

Editors

Prof. Prem Suman Jain
Director
Bahubali Prakrit Vidyapeeth (R.)
Shravanabelagola

Dr. Shukla Mukharjee
Project Officer
Rashtriaya Sanskrit Sansthan
New Delhi

: Jointly Published by :

Bahubali Prakrit Vidyapeeth (R.)
National Institute of Prakrit
Studies and Research
Shri Dhavala Teertham
Shravanabelagola - 573 135
Karnataka (India)

Rashtriya Sanskrit Sansthan
Deemed University
Under the Ministry of HRD
Govt. of India
56-57, Institutional Area, Janakpuri,
New Delhi - 110 058.

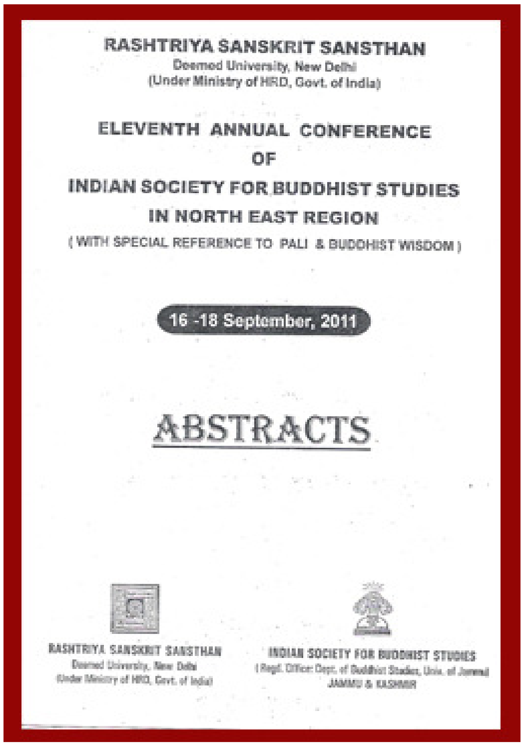
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed University, New Delhi
(Under Ministry of HRD, Govt. of India)

ELEVENTH ANNUAL CONFERENCE
OF
INDIAN SOCIETY FOR BUDDHIST STUDIES
IN NORTH EAST REGION
(WITH SPECIAL REFERENCE TO PALI & BUDDHIST WISDOM)

16 -18 September, 2011

ABSTRACTS

RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed University, New Delhi
(Under Ministry of HRD, Govt. of India)

INDIAN SOCIETY FOR BUDDHIST STUDIES
(Regd. Office: Dept. of Buddhist Studies, Univ. of Jammu)
JAMMU & KASHMIR

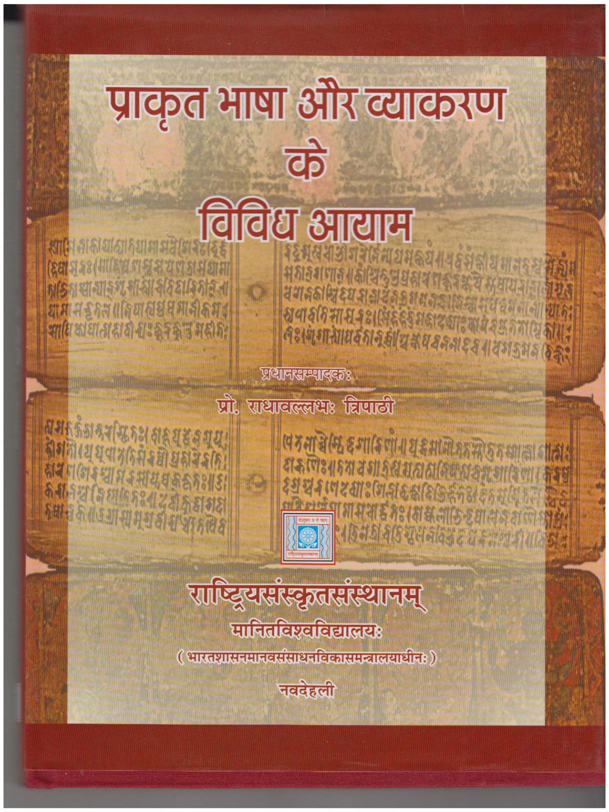
प्राकृत भाषा और व्याकरण
के
विविध आयाम
प्रधानसम्पादकः
प्रो. राधावल्लभः त्रिपाठी
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)
नवदेहली

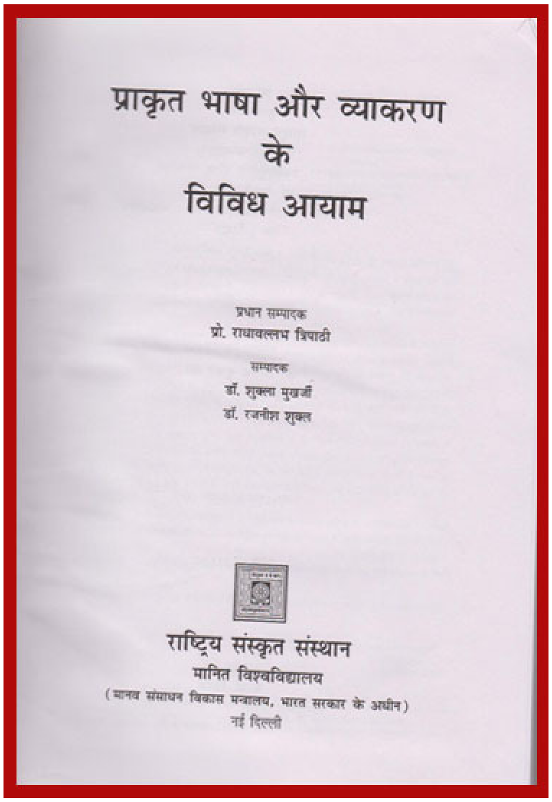
प्राकृत भाषा और व्याकरण
के
विविध आयाम
प्रधान सम्पादक
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
सम्पादक
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. रजनीश शुक्ल
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
नई दिल्ली

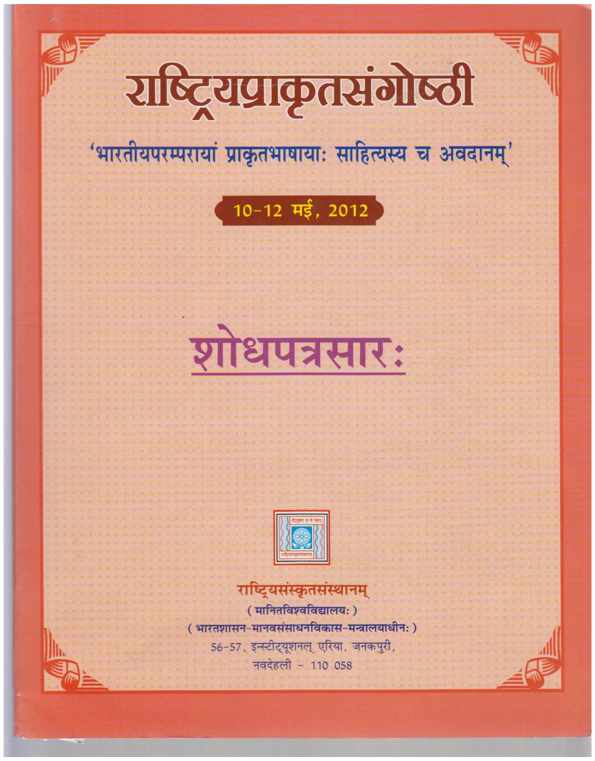
राष्ट्रियप्राकृतसंगोष्ठी
'भारतीयपरम्परायां प्राकृतभाषायाः साहित्यस्य च अवदानम्'
10-12 मई, 2012
शोधपत्रसारः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल् एरिया, जनकपुरी,
नवदेहली - 110 058

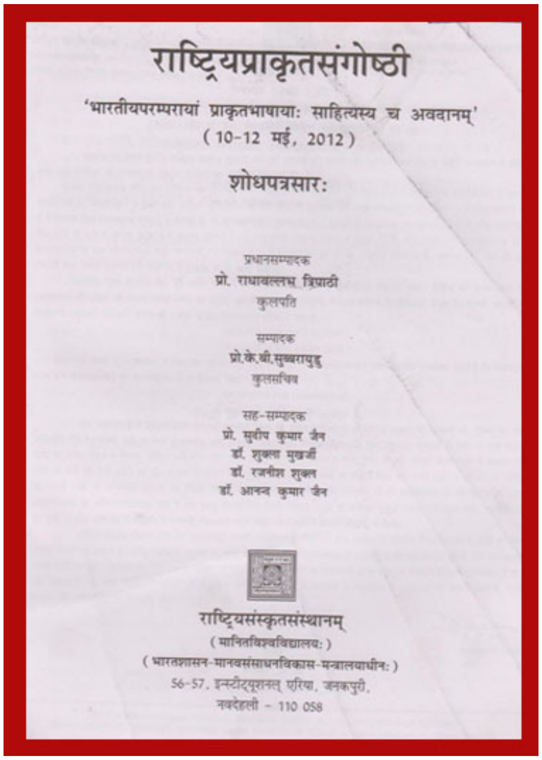
राष्ट्रियप्राकृतसंगोष्ठी
'भारतीयपरम्परायां प्राकृतभाषायाः साहित्यस्य च अवदानम्'
(10-12 मई, 2012)
शोधपत्रसारः
प्रधानसम्पादक
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति
सम्पादक
प्रो.के.बी.सुब्बरायुडु
कुलसचिव
सह-सम्पादक
प्रो. सुदीप कुमार जैन
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. रजनीश शुक्ल
डॉ. आनन्द कुमार जैन
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल् एरिया, जनकपुरी,
नवदेहली - 110 058

प्रकाशकः
कुलसचिवः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नवदेहली-110058
ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995
तार : संस्थान

ई मेल : rsks@nda.vsnl.net.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

सहायकसम्पादकः
डॉ. शुक्ला मुखर्जी
डॉ. रजनीशशुक्लः

© राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

प्रथमं संस्करणम् : 2013

ISBN : 978-93-82091-67-7

मूल्यम् : रू. 134/-

मुद्रकः
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

लखनऊ

पालि अध्ययन केन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय),
लखनऊ परिसर, गोमतीनगर, लखनऊ–226010 (उ०प्र०)

परिचय–

भारत सरकार की प्रेरणा व सहयोग से लुप्त हो रही प्राचीन भाषाओं– पालि/प्राकृत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए माननीय कुलपति प्रो० राधावल्लभ जी त्रिपाठी की अध्यक्षता में महामहिम राज्यपाल (उ०प्र०) श्री बी० एल० जोशी जी तथा संयुक्त सचिव (भाषा) डॉ० अनीता भटनागर जैन की उपस्थिति में 22 जनवरी 2010 को पालि अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन इस संकल्प के साथ किया गया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं की सेवा करना माताओं की सेवा करने के समान है तथा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत तीनों भाषाओं को बहनों के समान समझना चाहिए।

उद्देश्य–

- पालि/प्राकृत भाषा एवं साहित्य का प्रचार व प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रचलित पालि/प्राकृत के अध्ययन–अध्यापन की वास्तविक स्थिति का आकलन (प्रकाशन तथा लेखकों के विवरण सहित।)
- संस्कृत के समान पालि एवं प्राकृत के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के माध्यम से जन–जन में पालि व प्राकृत का प्रचार व प्रसार करना।
- जनोपयोगी पालि के संस्करणों को तैयार करके प्रचारित व प्रसारित करना।
- संस्कृतच्छाया के साथ पालि त्रिपिटक का नवीन संस्करण तैयार करना।
- देवनागरी में अनुपलब्ध पालि ग्रन्थों का जो सिंहली, स्यामी, बर्मी या रोमन में हैं, उनका देवनागरीकरण करना।
- हिन्दी भाषा में जिन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हुआ है, उनका हिन्दी अनुवाद करना।
- इण्टरनेट के लिए उपयुक्त प्राकृत शब्दकोश तैयार करवाना।
- स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे पालि एवं प्राकृत के विद्वानों की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन करना।
- पालि/प्राकृत विषय में नेट/जेआरएफ की तैयारी कर रहे छात्रों को सहयोग करना तथा विभिन्न विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में शोध कर रहे अध्येताओं का मार्गदर्शन तथा सहायता करना।

दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com
Website: www.rskslucknowcampus.org
E-mail : vijayjain.sampadak@gmail.com
मो० 09415789445, 09936253373

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पालि-ग्रन्थमाला

2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये
सुत्तनिपातपालि
(रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता)

पालि-ग्रन्थमाला-2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

सुत्तनिपातपालि

(रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता)

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

ग्रन्थ के संदर्भ में

पालि साहित्य में त्रिपिटक, त्रिपिटक में सुत्तपिटक और सुत्तपिटक के पञ्चम खुद्दकनिकाय के 14 ग्रन्थों में सुत्तनिपातपालि का धम्मपद की तरह महत्त्व है। सुत्तनिपातपालि में तत्कालीन उत्तरभारत की सामाजिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि अवस्थाओं के सम्बन्ध में प्रचुर सामग्री है। सुत्तनिपातपालि की सूक्तियों में अमृत रस भरा पड़ा है।

सुत्तनिपातपालि की अनेक गाथाएँ एवं सुत्त महायान संस्कृत साहित्य के महावस्तु, ललितविस्तर आदि ग्रन्थों में भी पाए जाते हैं। पहली ईस्वी में लिखित मिलिन्दपञ्हो में सुत्तनिपात का नाम और इसकी गाथाएँ भी उद्धृत हैं। इस तरह सुत्तनिपात की प्राचीनता स्वयंसिद्ध है।

भदन्त जगदीश काश्यप एवं राहुल सांकृत्यायन ने सुत्तनिपात को एक मौलिक एवं आदर्श ग्रन्थ माना है। महाराज अशोक ने सात ऐसे मुख्य सुत्तों को अपने भाब्रू शिलालेख पर खुदवाएँ थे, जिन्हें सभी को पढ़ने तथा आचरण करने की प्रेरणा दी थी, जिनमें चार सुत्तनिपात के हैं।

सुत्तनिपातपालि के अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग भगवान् के समय में ही प्रसिद्ध हो चुके थे। अट्ठकवग्ग तथागत को बड़ा प्रिय था। आयुष्मान् सोणकुटिकण्ण ने सम्पूर्ण अट्ठकवग्ग का पाठ भगवान् बुद्ध के समक्ष किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग का स्वतन्त्र अस्तित्त्व था।

इस ग्रन्थ में मूल पालि, रोमन, संस्कृतच्छाया, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद दिया गया है।

ISBN : 978-81-924536-1-3
Price : 500.00

पालि अध्ययन केन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय),
लखनऊ परिसर, गोमतीनगर, लखनऊ–226010 (उ०प्र०)

परिचय–

भारत सरकार की प्रेरणा व सहयोग से लुप्त हो रही प्राचीन भाषाओं– पालि/प्राकृत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए माननीय कुलपति प्रो० राधावल्लभ जी त्रिपाठी की अध्यक्षता में महामहिम राज्यपाल (उ०प्र०) श्री बी० एल० जोशी जी तथा संयुक्त सचिव (भाषा) डॉ० अनीता भटनागर जैन की उपस्थिति में 22 जनवरी 2010 को पालि अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन इस संकल्प के साथ किया गया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं की सेवा करना माताओं की सेवा करने के समान है तथा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत तीनों भाषाओं को बहनों के समान समझना चाहिए।

उद्देश्य–

- पालि/प्राकृत भाषा एवं साहित्य का प्रचार व प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रचलित पालि/प्राकृत के अध्ययन–अध्यापन की वास्तविक स्थिति का आकलन (प्रकाशन तथा लेखकों के विवरण सहित।)
- संस्कृत के समान पालि एवं प्राकृत के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के माध्यम से जन–जन में पालि व प्राकृत का प्रचार व प्रसार करना।
- जनोपयोगी पालि के संस्करणों को तैयार करके प्रचारित व प्रसारित करना।
- संस्कृतच्छाया के साथ पालि त्रिपिटक का नवीन संस्करण तैयार करना।
- देवनागरी में अनुपलब्ध पालि ग्रन्थों का जो सिंहली, स्यामी, बर्मी या रोमन में हैं, उनका देवनागरीकरण करना।
- हिन्दी भाषा में जिन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हुआ है, उनका हिन्दी अनुवाद करना।
- इण्टरनेट के लिए उपयुक्त प्राकृत शब्दकोश तैयार करवाना।
- स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे पालि एवं प्राकृत के विद्वानों की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन करना।
- पालि/प्राकृत विषय में नेट/जेआरएफ की तैयारी कर रहे छात्रों को सहयोग करना तथा विभिन्न विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में शोध कर रहे अध्येताओं का मार्गदर्शन तथा सहायता करना।

दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com
Website: www.rskslucknowcampus.org
E-mail : vijayjain.sampadak@gmail.com
मो० 09415789445, 09936253373

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पालि-ग्रन्थमाला

3

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये
विमानवत्थुपालि एवं पेतवत्थुपालि
(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि-ग्रन्थमाला-3

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

विमानवत्थुपालि

एवं

पेतवत्थुपालि

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

ग्रन्थ के संदर्भ में

प्रस्तुत विमानवत्थुपालि एवं पेतवत्थुपालि नामक ग्रन्थों को संगीतिकारों ने सुत्तपिटक के पाँचवें निकाय खुद्दकनिकाय के 15 ग्रन्थों में से क्रमशः छठवें एवं सातवें स्थान पर रखा है। 'विमान' शब्द से तात्पर्य यहाँ देवावासों से है तथा 'वत्थु' से तात्पर्य कथा व कहानी है। अतः विमानवत्थु का तात्पर्य देववासों में रहने वाले देवों की कथा से है।

विमानवत्थुपालि (विमानवस्तु):– इस ग्रन्थ में 85 देवावासों (विमानों) का वर्णन किया गया है जिनको सात वर्गों में बाँटा गया है– 1. पीठवग्गो, 2. चित्तलतावग्गो, 3. पारिच्छत्तकवग्गो, 4. मञ्जिट्ठकवग्गो, 5. महारथवग्गो, 6. पायासिवग्गो एवं 7. सुनिक्खित्तवग्गो।

प्रथम चार वर्गों में स्त्री देवताओं के सत्कर्मों का निरूपण किया गया है। तथा शेष तीन वर्गों में पुरुष देवों के कुशल कर्मों का वर्णन किया गया है। प्रथम स्त्रीविमान के अन्तर्गत– 50 देवावासों का तथा द्वितीय पुरुषविमान के अर्न्तगत 35 देवावासों का वर्णन किया गया है। स्त्रीविमान तथा पुरुष विमान में क्रमशः 856 तथा 433 गाथाओं का वर्णन हुआ है।

पेतवत्थुपालि (प्रेतवस्तु):– यह खुद्दक-निकाय का सातवाँ ग्रन्थ है। इसमें अशुभकर्मों के फलस्वरूप जीवों के द्वारा प्राप्त प्रेतयोनियों का वर्णन किया गया है। जिसमें जीव विभिन्न प्रकार के नारकीय कष्टों को भोगता है।

इस ग्रन्थ को चार वर्गों में विभाजित किया गया है– 1. उरगवग्गो, 2. उब्बरिवग्गो, 3. चूलवग्गो तथा 4. महावग्गो जिनमें कुल मिलाकर 51 प्रेतों का वर्णन हुआ है।

विषयवस्तु की दृष्टि से देखा जाए तो इन ग्रन्थद्वय में कर्म तथा कर्मफल के सिद्धान्त का ही विभिन्न कथानकों के माध्यम से निरूपण किया गया है। विमानवत्थु में वर्णित कहानियों में मौद्गल्यायन द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर विभिन्न देवताओं ने जो अपने पूर्वजन्मकृत पुण्य फलस्वरूप देवावासों को यथायोग्य प्राप्त किया था, का वर्णन हुआ है। इसी प्रकार प्रेतवस्तु में विभिन्न प्रेतों के अपने पूर्वजन्मकृत पापकर्मों के फलस्वरूप प्राप्त अनेक नारकीय स्थानों का वर्णन किया गया है।

ग्रन्थद्वय की रचना विशेषकर सामान्यजन को दृष्टि में रखकर की गई है।

इस ग्रन्थ में मूलपालि, संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद दिया गया है।

ISBN : 978-81-924536-2-0
Price : 500.00

पालि अध्ययन केन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय),
लखनऊ परिसर, गोमतीनगर, लखनऊ–226010 (उ०प्र०)

परिचय–

भारत सरकार की प्रेरणा व सहयोग से लुप्त हो रही प्राचीन भाषाओं– पालि/प्राकृत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए माननीय कुलपति प्रो० राधावल्लभ जी त्रिपाठी की अध्यक्षता में महामहिम राज्यपाल (उ०प्र०) श्री बी० एल० जोशी जी तथा संयुक्त सचिव (भाषा) डॉ० अनीता भटनागर जैन की उपस्थिति में 22 जनवरी 2010 को पालि अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन इस संकल्प के साथ किया गया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं की सेवा करना माताओं की सेवा करने के समान है तथा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत तीनों भाषाओं को बहनों के समान समझना चाहिए।

उद्देश्य–

- पालि/प्राकृत भाषा एवं साहित्य का प्रचार व प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रचलित पालि/प्राकृत के अध्ययन–अध्यापन की वास्तविक स्थिति का आकलन (प्रकाशन तथा लेखकों के विवरण सहित।)
- संस्कृत के समान पालि एवं प्राकृत के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के माध्यम से जन–जन में पालि व प्राकृत का प्रचार व प्रसार करना।
- जनोपयोगी पालि के संस्करणों को तैयार करके प्रचारित व प्रसारित करना।
- संस्कृतच्छाया के साथ पालि त्रिपिटक का नवीन संस्करण तैयार करना।
- देवनागरी में अनुपलब्ध पालि ग्रन्थों का जो सिंहली, स्यामी, बर्मी या रोमन में हैं, उनका देवनागरीकरण करना।
- हिन्दी भाषा में जिन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हुआ है, उनका हिन्दी अनुवाद करना।
- इण्टरनेट के लिए उपयुक्त प्राकृत शब्दकोश तैयार करवाना।
- स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे पालि एवं प्राकृत के विद्वानों की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन करना।
- पालि/प्राकृत विषय में नेट/जेआरएफ की तैयारी कर रहे छात्रों को सहयोग करना तथा विभिन्न विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में शोध कर रहे अध्येताओं का मार्गदर्शन तथा सहायता करना।

दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com
Website: www.rskslucknowcampus.org
E-mail : vijayjain.sampadak@gmail.com
मो० 09415789445, 09936253373

पालि-ग्रन्थमाला

4

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये थेरगाथापालि एवं थेरीगाथापालि (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि–ग्रन्थमाला–4

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

थेरगाथापालि

एवं

थेरीगाथापालि

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

ग्रन्थ के संदर्भ में

थेरगाथा एवं थेरीगाथा खुद्दकनिकाय के दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। इन दो ग्रन्थों में बुद्धकालीन भिक्षु और भिक्षुणियों के पद्य–बद्ध जीवन संस्मरण है। थेरगाथा में 264 भिक्षुओं के उद्‌गार हैं, जो 1288 गाथाओं में हैं। तथा 21 निपातों में विभक्त हैं। थेरगाथा में अन्तर्जगत के अनुभवों की बहुलता है, जो भिक्षुओं के ध्यान के प्रसंग में ये वर्णन वहाँ स्वभावतः आ गये हैं। थेरगाथा की दो बड़ी विशेषताएँ हैं– भिक्षुओं के आन्तरिक अनुभव का वर्णन और उनका प्रकृति–दर्शन। थेरीगाथा में 73 भिक्षुणियों के उद्‌गार हैं, जो 524 गाथाओं में हैं तथा 16 निपातों में विभक्त हैं, कुछ गाथाएँ भिक्षुणियों की सामूहिक रचनाएँ भी हैं। अतः अलग–अलग गिनती करने पर रचना करने वाली भिक्षुणियों की संख्या कुछ अधिक– लगभग सौ भी हो जाती है। अत्यन्त संगीतात्मक भाषा में, आत्माभि– व्यंजनात्मक गीतिकाव्य की शैली के आधार पर अपने जीवनानुभवों को व्यक्त करते हुए यहाँ बौद्ध भिक्षुणियों ने अपने जीवन–काव्य को गाया है। नैतिक सच्चाई, भावनाओं की गहनता और सबसे बढ़कर एक अपराजित वैयक्तिक ध्वनि इन गीतों की मुख्य विशेषताएँ हैं। निर्वाण की परम शान्ति से भिक्षुणियों के उद्‌गारों का एक–एक शब्द उच्छ्‌वासित है। यहाँ संगीत भी है और जीवन का सच्चा दर्शन भी।

इस ग्रन्थ में मूलपालि, संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद दिया गया है।

ISBN : 978-81-924536-3-7
Price : 500.00

पालि अध्ययन केन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय),
लखनऊ परिसर, गोमतीनगर, लखनऊ–226010 (उ०प्र०)

परिचय–

भारत सरकार की प्रेरणा व सहयोग से लुप्त हो रही प्राचीन भाषाओं– पालि/प्राकृत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए माननीय कुलपति प्रो० राधावल्लभ जी त्रिपाठी की अध्यक्षता में महामहिम राज्यपाल (उ०प्र०) श्री बी० एल० जोशी जी तथा संयुक्त सचिव (भाषा) डॉ० अनीता भटनागर जैन की उपस्थिति में 22 जनवरी 2010 को पालि अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन इस संकल्प के साथ किया गया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं की सेवा करना माताओं की सेवा करने के समान है तथा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत तीनों भाषाओं को बहनों के समान समझना चाहिए।

उद्देश्य–

- पालि/प्राकृत भाषा एवं साहित्य का प्रचार व प्रसार करना।
- विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रचलित पालि/प्राकृत के अध्ययन–अध्यापन की वास्तविक स्थिति का आकलन (प्रकाशन तथा लेखकों के विवरण सहित।)
- संस्कृत के समान पालि एवं प्राकृत के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के माध्यम से जन–जन में पालि व प्राकृत का प्रचार व प्रसार करना।
- जनोपयोगी पालि के संस्करणों को तैयार करके प्रचारित व प्रसारित करना।
- संस्कृतच्छाया के साथ पालि त्रिपिटक का नवीन संस्करण तैयार करना।
- देवनागरी में अनुपलब्ध पालि ग्रन्थों का जो सिंहली, स्यामी, बर्मी या रोमन में हैं, उनका देवनागरीकरण करना।
- हिन्दी भाषा में जिन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हुआ है, उनका हिन्दी अनुवाद करना।
- इण्टरनेट के लिए उपयुक्त प्राकृत शब्दकोश तैयार करवाना।
- स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे पालि एवं प्राकृत के विद्वानों की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन करना।
- पालि/प्राकृत विषय में नेट/जेआरएफ की तैयारी कर रहे छात्रों को सहयोग करना तथा विभिन्न विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय में शोध कर रहे अध्येताओं का मार्गदर्शन तथा सहायता करना।

दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com
Website: www.rskslucknowcampus.org
E-mail : vijayjain.sampadak@gmail.com
मो० 09415789445, 09936253373

पालि-ग्रन्थमाला

5

सुत्तपिटके संयुत्तनिकायपालि (1–सगाथवग्गो) (संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि–ग्रन्थमाला–5

सुत्तपिटके

संयुत्तनिकायपालि

(1–सगाथवग्गो)

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

ग्रन्थ के संदर्भ में

संयुत्तनिकाय सुत्त–पिटक का तीसरा ग्रंथ है। इसमें छोटे–बड़े सभी प्रकार के सुत्तों के संग्रह हैं। इसके पाँच बड़े वर्गों में से सगाथा वर्ग एक महत्त्वपूर्ण वर्ग है। इस वर्ग के समस्त सूत्रों की संख्या 271 है। इसमें ग्यारह महत्त्वपूर्ण संयुत्त हैं– देवतासंयुत्त, देवपुत्तसंयुत्त, कोसलसंयुत्त, मारसंयुत्त, भिक्खुणीसंयुत्त, ब्रह्मसंयुत्त, ब्राह्मणसंयुत्त, वङ्गीससंयुत्त, वनसंयुत्त, यक्खसंयुत्त, सक्कसंयुत्त।

सगाथवर्ग के अधिकांश सूत्र प्रश्नोत्तर शैली मे हैं। इसकी गाथाओं में गम्भीर से गम्भीर विषयों का विवेचन, दार्शनिक तथा साहित्यिक पहलुओं का चित्रण है। साथ–साथ इसमें तत्कालीन राजनीति, समाजव्यवस्था और धार्मिक गतिविधियों का भी स्पष्ट चित्रण मिलता है।

बुद्धवचनों का प्राचीन विभाजन नौ अंगो में किया गया है। उनमें प्रथम गाथा है। इसमें संयुत्तनिकाय के सगाथवग्ग का संदर्भ दिया जाता है। सूत्रों के प्रारम्भ में सम्बन्धित स्थान, काल, व्यक्ति तथा अवस्था का परिचय दिया गया है। जहाँ, जब, जिन्हें और जिन परिस्थितियों में भगवान् बुद्ध ने उपदेश दिये। तथागत के पास आगत व्यक्ति गाथाओं के माध्यम से कुछ विशेष प्रश्न पूछता था और भगवान् गाथाओं के माध्यम से ही उसे तदनुरूप उत्तर देते थे। इस विशेषता के चलते इस वर्ग का नाम सगाथावर्ग पड़ा है।

इस वर्ग में आई गाथाओं का महत्त्व इसी से पता चलता है कि इसकी दो गाथाएँ **अन्तो जटा बहिजटा..........** पर अट्ठकथाकार बुद्धघोष ने विसुद्धिमग्ग जैसे ग्रन्थ की रचना किया। बुद्धकालीन छः तैर्थिकों का वर्णन मिलता है। भिक्षुणिसंयुक्त में भिक्षुणियों के संवाद हैं। यहाँ वजिरासुत्त की गाथा सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य में प्रख्यात है– **'यथा हि अङ्गसम्मारा.........सत्तो ति सम्मुति'**। यह गाथा मिलिन्दपञ्हो ग्रंथ में अति महत्त्वपूर्ण रूप में वर्णित होने के कारण इतनी प्रसिद्ध है कि यह सभी बौद्ध भिक्षुओं को कण्ठस्थ रहती है।

इस ग्रन्थ में मूलपालि, संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद दिया गया है।

ISBN : 978-81-924536-4-4
Price : 500.00

जयपुर

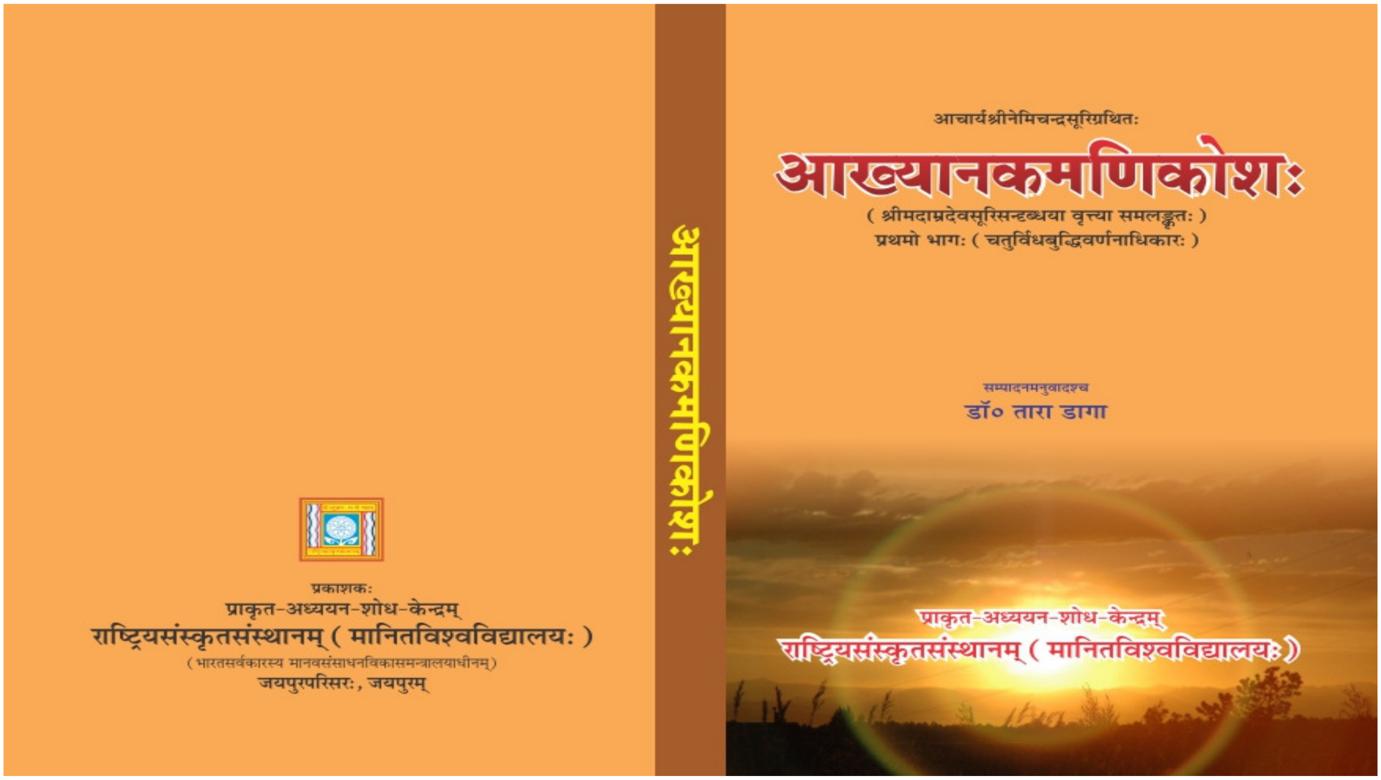
आचार्यश्रीनेमिचन्द्रसूरिग्रथितः
आख्यानकमणिकोशः
(श्रीमदाम्रदेवसूरिसन्दृब्धया वृत्त्या समलङ्कृतः)
प्रथमो भागः (चतुर्विधबुद्धिवर्णनाधिकारः)
सम्पादनमनुवादश्च
डॉ० तारा डागा
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
आख्यानकमणिकोशः
प्रकाशकः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

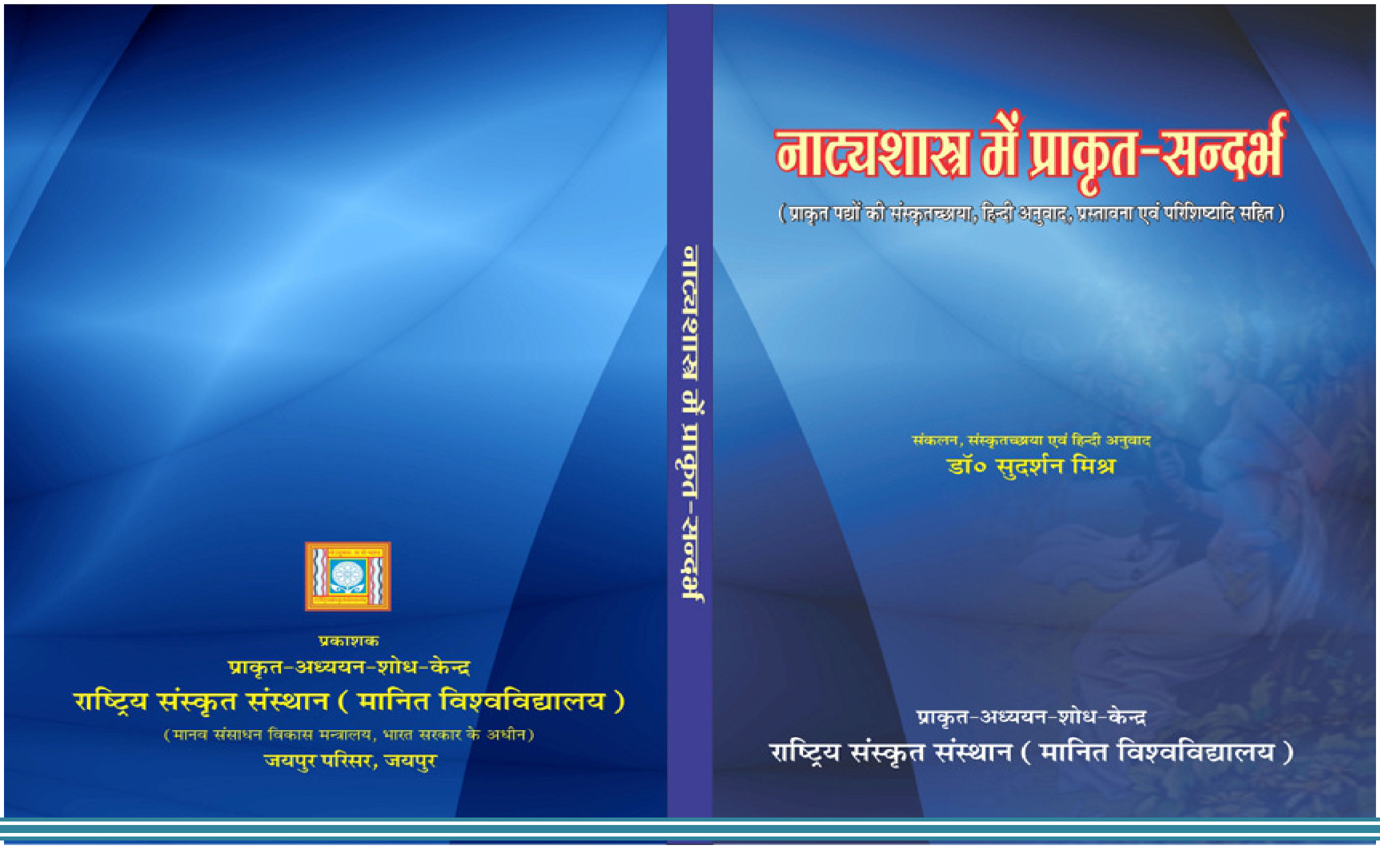
नाट्यशास्त्र में प्राकृत-सन्दर्भ
(प्राकृत पद्यों की संस्कृतच्छाया, हिन्दी अनुवाद, प्रस्तावना एवं परिशिष्टादि सहित)
संकलन, संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद
डॉ० सुदर्शन मिश्र
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्र
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
नाट्यशास्त्र में प्राकृत-सन्दर्भ
प्रकाशक
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्र
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
जयपुर परिसर, जयपुर

प्रकाशक:
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्
आइरियभद्दबाहुविरइओ
किरियासारो
(आचार्यभद्रबाहुविरचितः क्रियासारः)
संस्कृतच्छाया सम्पादनमनुवादश्च
डॉ० धर्मेन्द्रजैनः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

प्रकाशक:
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्
मुणिपोम्मसिंहविरइओ
णाणसारो
(मुनिपद्मसिंहविरचितो ज्ञानसारः)
संस्कृतच्छाया सम्पादनमनुवादश्च
डॉ० धर्मेन्द्रजैनः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

आइरियगुणहरविरइयं
कसायपाहुडसुत्तं
(आचार्यगुणधरविरचितं कषायप्राभृतसूत्रम्)
संस्कृतच्छाया सम्पादनमनुवादश्च
डॉ० धर्मेन्द्रजैनः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
कसायपाहुडसुत्तं
प्रकाशकः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्

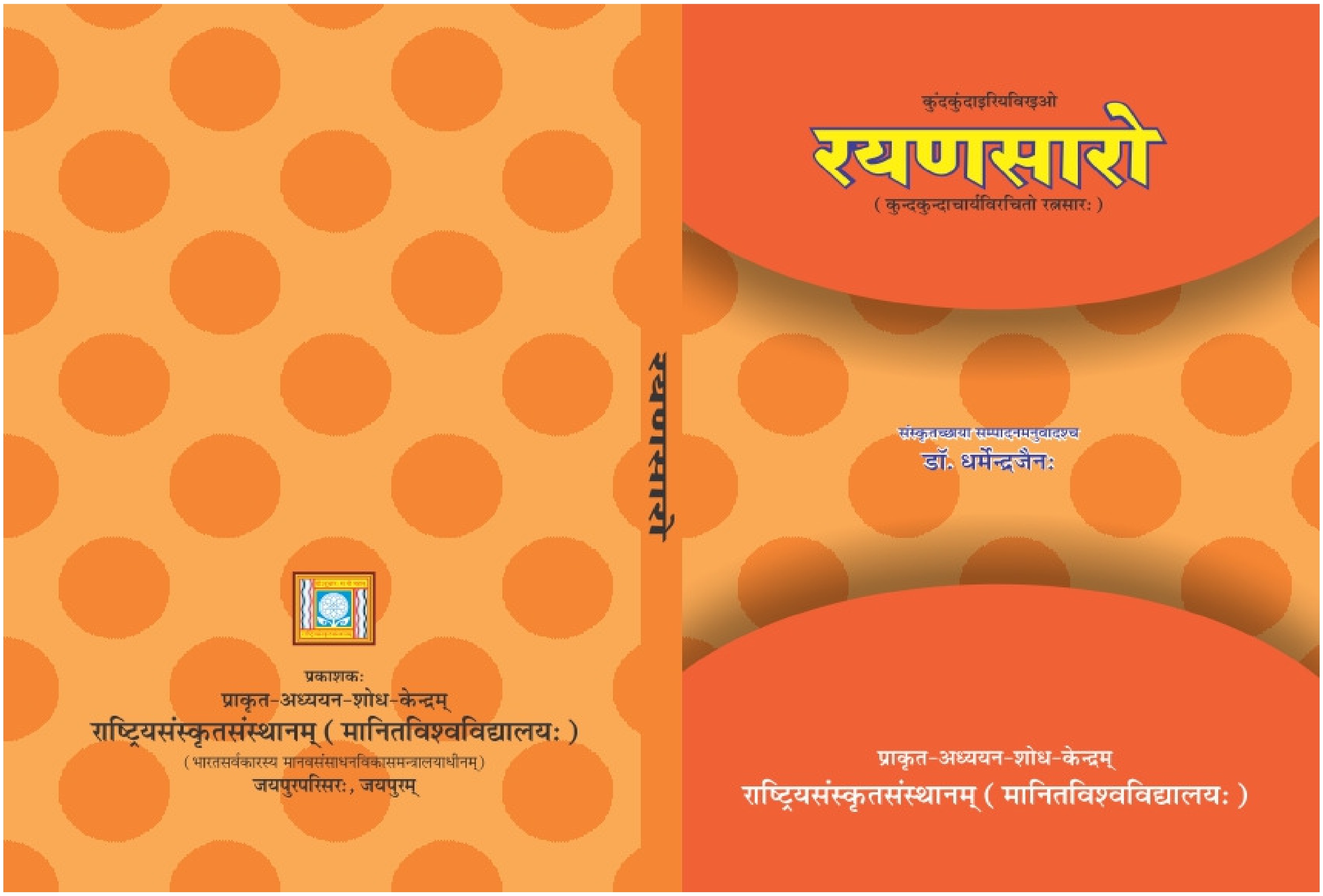
कुंदकुंदाइरियविरइओ
रयणसारो
(कुन्दकुन्दाचार्यविरचितो रत्नसारः)
संस्कृतच्छाया सम्पादनमनुवादश्च
डॉ. धर्मेन्द्रजैनः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
रयणसारो
प्रकाशकः
प्राकृत-अध्ययन-शोध-केन्द्रम्
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
(भारतसर्वकारस्य मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
जयपुरपरिसरः, जयपुरम्